



**Test Date : 10 Dec 2022**

**Test Slot : slot 2**

**Subject : SANH-Sanskrit Studies**

**Sl. No.1**

**QBID:9062001**

‘आघृणि’ इति कस्य देवस्य विशेषणम्

(1) उषसः

(2) अग्नेः

(3) इन्द्रस्य

(4) पूषणः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20641]

2[Option ID=20642]

3[Option ID=20643]

4[Option ID=20644]

**Sl. No.2**

**QBID:9062002**

मन्त्रोच्चारणे स्वरस्य प्रमुखभेदाः सन्ति

(1) त्रयः

(2) चत्वारः

(3) पञ्च

(4) षट्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20645]

2[Option ID=20646]

3[Option ID=20647]

4[Option ID=20648]

**Sl. No.3**

**QBID:9062003**

एतेषु ‘उषसः’ विशेषणं नास्ति

(1) विश्ववारा

(2) सुभग्रा

(3) वनस्पतिः

(4) मधोनी

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20649]  
2[Option ID=20650]  
3[Option ID=20651]  
4[Option ID=20652]

Sl. No.4

QBID:9062004

पूर्वापरनिरपेक्षेण हि येन रसचर्वणा क्रियते इति किम्

- |              |              |
|--------------|--------------|
| (1) भाणः     | (2) प्रहसनम् |
| (3) मुक्तकम् | (4) कारिका   |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20653]  
2[Option ID=20654]  
3[Option ID=20655]  
4[Option ID=20656]

Sl. No.5

QBID:9062005

‘राघवपाण्डवीयम्’ इति ग्रन्थस्य प्रणेता वर्तते ?

- |                 |             |
|-----------------|-------------|
| (1) हरदत्तसूनुः | (2) कविराजः |
| (3) शिवस्वामी   | (4) हलायुधः |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20657]  
2[Option ID=20658]  
3[Option ID=20659]  
4[Option ID=20660]

Sl. No.6

QBID:9062006

कौटिल्यमतानुसारं विद्याः सन्ति -

- |             |             |
|-------------|-------------|
| (1) चतुर्दश | (2) चतस्रः  |
| (3) तिस्रः  | (4) अष्टादश |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20661]

2[Option ID=20662]

3[Option ID=20663]

4[Option ID=20664]

Sl. No.7

QBID:9062007

वैदिकविकृतिपाठान् क्रमानुसारं कुरुत -

- (A) ध्वजः
- (B) शिखा
- (C) माला
- (D) घनः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) B, A, C, D
- (2) D, B, A, C
- (3) C, B, A, D
- (4) A, C, B, D

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20665]

2[Option ID=20666]

3[Option ID=20667]

4[Option ID=20668]

Sl. No.8

QBID:9062008

विष्णोः अवतारान् क्रमानुगुणं कुरुत -

- (A) नृसिंहः
- (B) वामनः
- (C) वराहः
- (D) कूर्मः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) C, B, D, A
- (2) B, C, D, A
- (3) C, B, A, D
- (4) D, C, A, B

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20669]

2[Option ID=20670]

3[Option ID=20671]

4[Option ID=20672]

Sl. No.9

QBID:9062009

“Asiatic Society” इति संस्था कदा संस्थापिता?

(1) 1796

(2) 1784

(3) 1788

(4) 1764

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20673]

2[Option ID=20674]

3[Option ID=20675]

4[Option ID=20676]

Sl. No.10

QBID:9062010

यथोचितं मेलयत

सूची-I

सूची-II

(A) लभ्यम्

(I) क्यप्

(B) शिष्यः

(II) ण्यत्

(C) कार्यम्

(III) अच्

(D) चयः

(IV) यत्

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

(1) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

(2) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

(3) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(IV)

(4) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20677]

2[Option ID=20678]

3[Option ID=20679]

4[Option ID=20680]

Sl. No.11

QBID:9062011

यथोचितं मेलयत

| सूची-I     | सूची-II     |
|------------|-------------|
| (A) कारणा  | (I) ल्यु    |
| (B) हसनम्  | (II) क्त    |
| (C) नन्दनः | (III) युच्  |
| (D) भिन्नः | (IV) ल्युट् |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)
- (2) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(IV)
- (3) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)
- (4) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20681]

2[Option ID=20682]

3[Option ID=20683]

4[Option ID=20684]

Sl. No.12

QBID:9062012

समुचितं मेलयत

| सूची-I        | सूची-II    |
|---------------|------------|
| (A) वृक्षवान् | (I) ठञ्    |
| (B) दण्डी     | (II) मतुप् |
| (C) दण्डिकः   | (III) इनि  |
| (D) गौशतिकः   | (IV) ठन्   |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
- (2) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)
- (3) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)
- (4) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20685]

2[Option ID=20686]

3[Option ID=20687]

4[Option ID=20688]

Sl. No.13

QBID:9062013

पञ्चाग्नविद्या प्राप्यते -

(1) मुण्डकोपनिषदि

(2) ईशावास्योपनिषदि

(3) छान्दोग्योपनिषदि

(4) केनोपनिषदि

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20689]

2[Option ID=20690]

3[Option ID=20691]

4[Option ID=20692]

Sl. No.14

QBID:9062014

“National Mission for Manuscripts” इति संस्था कुत्र वर्तते ?

(1) देहल्याम्

(2) प्रयागराजे

(3) मैसूरे

(4) जोधपुरे

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20693]

2[Option ID=20694]

3[Option ID=20695]

4[Option ID=20696]

Sl. No.15

QBID:9062015

अधिकरणपद्धतौ किं नास्ति ?

(1) संशयः

(2) पूर्वपक्षः

(3) विषयः

(4) उपसंहारः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

- 1[Option ID=20697]  
2[Option ID=20698]  
3[Option ID=20699]  
4[Option ID=20700]

Sl. No.16  
QBID:9062016

‘तत्त्वमसि’ इति महावाक्ये अखण्डार्थप्रतीतिः कया लक्षणया सम्भवति ?

- |                   |                    |
|-------------------|--------------------|
| (1) स्वरूपलक्षणया | (2) जहदजहल्लक्षणया |
| (3) अजहजल्लक्षणया | (4) जहल्लक्षणया    |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

- 1[Option ID=20701]  
2[Option ID=20702]  
3[Option ID=20703]  
4[Option ID=20704]

Sl. No.17  
QBID:9062017

सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा अभिधीयते —————।

- |             |            |
|-------------|------------|
| (1) संवर्तः | (2) विकारः |
| (3) विवर्तः | (4) आरोपः  |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

- 1[Option ID=20705]  
2[Option ID=20706]  
3[Option ID=20707]  
4[Option ID=20708]

Sl. No.18  
QBID:9062018

साधनचतुष्टयेषु कस्य गणना नास्ति —————।

- |                            |                       |
|----------------------------|-----------------------|
| (1) नित्यानित्यवस्तुविवेकः | (2) शमादिषट्सम्पत्तिः |
| (3) स्वर्गादीष्टसाधनानि    | (4) मुमुक्षुत्वम्     |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

- 1[Option ID=20709]  
2[Option ID=20710]

3[Option ID=20711]  
4[Option ID=20712]

Sl. No.19

QBID:9062019

साध्याभावव्याप्ति हेतुः —————।

- |                   |              |
|-------------------|--------------|
| (1) सत्प्रतिपक्षः | (2) साधारणः  |
| (3) अनैकान्तिकः   | (4) विरुद्धः |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20713]  
2[Option ID=20714]  
3[Option ID=20715]  
4[Option ID=20716]

Sl. No.20

QBID:9062020

मेघदूतस्य अमुं पद्यं चरणक्रमेण योजयत -

- (A) काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमैत्य।  
(B) वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु।  
(C) स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पपुष्पम्।  
(D) आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्ग्य शैलम्।

यथोचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (B), (C), (D), (A)  
(2) (D), (B), (A), (C)  
(3) (B), (A), (C), (D)  
(4) (A), (C), (D), (B)

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20717]  
2[Option ID=20718]  
3[Option ID=20719]  
4[Option ID=20720]

Sl. No.21

QBID:9062021

सांख्यमतानुसारं योजयत -

| सूची-I              | सूची-II         |
|---------------------|-----------------|
| (A) उर्ध्वगमनम्     | (I) अधर्मेण     |
| (B) अधोगमनम्        | (II) विपर्ययात् |
| (C) अपवर्गप्राप्तिः | (III) धर्मेण    |
| (D) बन्धः           | (IV) ज्ञानेन    |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)
- (2) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)
- (3) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(IV)
- (4) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20721]

2[Option ID=20722]

3[Option ID=20723]

4[Option ID=20724]

Sl. No.22

QBID:9062022

वाक्यपदीयं कारिकांशं चिनुत -

- (A) सामान्यपरिहीनास्तु सर्वे जात्यादयो मताः।
- (B) न वर्णव्यतिरेकेण पदमन्यच्च विद्यते।
- (C) जन्यानां जनकः कालो जगतामाश्रयो मतः।
- (D) पदे वर्णा न विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A), (B) केवलम्
- (2) (B), (C) केवलम्
- (3) (B), (D) केवलम्
- (4) (C), (D) केवलम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20725]

2[Option ID=20726]

3[Option ID=20727]

4[Option ID=20728]

Sl. No.23

QBID:9062023

अधोलिखितानां केन आन्तर्येण सह कस्य सम्बन्ध इति चिनुत -

| सूची-I       | सूची-II             |
|--------------|---------------------|
| (A) स्थानम्  | (I) बाह्ययत्नः      |
| (B) अर्थः    | (II) उच्चारणकालः    |
| (C) गुणः     | (III) अभिधेयः       |
| (D) प्रमाणम् | (IV) उच्चारणस्थानम् |

समुचितं विकल्प चिनुत -

- (1) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(I)
- (2) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(II)
- (3) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(IV)
- (4) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20729]

2[Option ID=20730]

3[Option ID=20731]

4[Option ID=20732]

Sl. No.24

QBID:9062024

न्यायदर्शनसम्मतं कर्म चिनुत -

- (A) भ्रमणम्
- (B) गमनम्
- (C) प्रसारणम्
- (D) दर्शनम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A), (B) केवलम्
- (2) (B), (C) केवलम्
- (3) (A), (C) केवलम्
- (4) (C), (D) केवलम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20733]

2[Option ID=20734]

3[Option ID=20735]

4[Option ID=20736]

Sl. No.25

QBID:9062025

वैदिकयज्ञे प्रयुक्तम् अग्निं चिनुत -

- (A) आहवनीयः
- (B) गार्हपत्यः
- (C) प्राजापत्यः
- (D) प्रोक्षणीयः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A), (B) केवलम्
- (2) (B), (C) केवलम्
- (3) (A), (C) केवलम्
- (4) (C), (D) केवलम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20737]  
2[Option ID=20738]  
3[Option ID=20739]  
4[Option ID=20740]

Sl. No.26  
QBID:9062026

‘अकारं चाऽप्युकारं च मकारं च प्रजापतिः’ इति प्राप्यते -

- |                          |               |
|--------------------------|---------------|
| (1) मुण्डकोपनिषदि        | (2) ऋग्वेदे   |
| (3) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् | (4) मनुस्मृतौ |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20741]  
2[Option ID=20742]  
3[Option ID=20743]  
4[Option ID=20744]

Sl. No.27  
QBID:9062027

वेदान्तसारानुसारम् अध्यारोपापवादविधिना कः लभ्यते?

- |           |            |
|-----------|------------|
| (1) अर्थः | (2) धर्मः  |
| (3) कामः  | (4) मोक्षः |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20745]  
2[Option ID=20746]  
3[Option ID=20747]  
4[Option ID=20748]

Sl. No.28  
QBID:9062028

सूत्रप्रकारानुसारं मेलयत -

| सूची-I                    | सूची-II       |
|---------------------------|---------------|
| (A) स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ | (I) नियमः     |
| (B) इको गुणवृद्धी         | (II) विधिः    |
| (C) इको यणचि              | (III) परिभाषा |
| (D) कृतद्धितसमासाश्च      | (IV) अतिदेशः  |

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(III)
- (2) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)
- (3) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)
- (4) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20749]

2[Option ID=20750]

3[Option ID=20751]

4[Option ID=20752]

Sl. No.29

QBID:9062029

संस्कृतव्याकरणे लुमताः के?

- |                    |                    |
|--------------------|--------------------|
| (1) टित्-कित्-मितः | (2) अित्-णित्-डितः |
| (3) लुक्-श्लु-लुपः | (4) अिटुडुवः       |

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20753]

2[Option ID=20754]

3[Option ID=20755]

4[Option ID=20756]

Sl. No.30

QBID:9062030

योगसूत्रक्रमेण योजयत -

- (A) तपः
- (B) सन्तोषः
- (C) स्वाध्यायः
- (D) शौचः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A), (B), (C), (D)
- (2) (C), (D), (A), (B)
- (3) (D), (B), (A), (C)
- (4) (B), (C), (A), (D)

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20757]  
2[Option ID=20758]  
3[Option ID=20759]  
4[Option ID=20760]

Sl. No.31

QBID:9062031

सांख्यमतानुसारं यथोचितं मेलयत -

सूची-I

- (A) अयुगपत् प्रवृत्तेः
- (B) भोक्तृभावात्
- (C) समानाभिहारात्
- (D) कारणभावात्

सूची-II

- (I) प्रत्यक्षतोऽनुपलब्धिः
- (II) सत्कार्यम्
- (III) पुरुषबहुत्वम्
- (IV) पुरुषसत्ता

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)
- (2) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)
- (3) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(II)
- (4) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20761]  
2[Option ID=20762]  
3[Option ID=20763]  
4[Option ID=20764]

Sl. No.32  
QBID:9062032

अधोलिखिते कथने पठित्वा उत्तरं चिनुत -

कथन I : ऊदन्तस्य नित्यस्त्रीलिङ्गिनः 'घि' संज्ञा भवन्ति।

कथन II : उदन्तस्य घि संज्ञा भवति।

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) उभये कथने सत्ये स्तः
- (2) उभये कथने असत्ये स्तः
- (3) प्रथमं कथनं सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम्
- (4) प्रथमं कथनम् असत्यं, किन्तु द्वितीयं सत्यम्

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20765]  
2[Option ID=20766]  
3[Option ID=20767]  
4[Option ID=20768]

Sl. No.33  
QBID:9062033

मम्मटोक्त - काव्यप्रयोजनानि कति सन्ति -

- |       |       |
|-------|-------|
| (1) 8 | (2) 7 |
| (3) 6 | (4) 4 |

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20769]  
2[Option ID=20770]  
3[Option ID=20771]  
4[Option ID=20772]

Sl. No.34  
QBID:9062034

कौटिलीय - अर्थशास्त्रानुसारं विद्याविनयहेतुः कः भवति ?

- |               |                 |
|---------------|-----------------|
| (1) दण्डनीतिः | (2) इन्द्रियजयः |
| (3) तितिक्षा  | (4) तपः         |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20773]  
2[Option ID=20774]  
3[Option ID=20775]  
4[Option ID=20776]

Sl. No.35

QBID:9062035

‘काव्यबन्धास्तु कर्तव्याः षट्त्रिंशत् लक्षणान्विताः’ इति कुत्रोक्तम् ?

- |                             |                   |
|-----------------------------|-------------------|
| (1) काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तौ | (2) काव्यालङ्कारे |
| (3) नाट्यशास्त्रे           | (4) कुवलयानन्दे   |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20777]  
2[Option ID=20778]  
3[Option ID=20779]  
4[Option ID=20780]

Sl. No.36

QBID:9062036

‘कौटिलीय - अर्थशास्त्रानुसारं ये बन्धुषु निःस्नेहाः क्रूराश्चालसाश्च’ ते के भवन्ति ?

- |            |              |
|------------|--------------|
| (1) सगिणः  | (2) सञ्जाराः |
| (3) शत्रवः | (4) रसदाः    |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20781]  
2[Option ID=20782]  
3[Option ID=20783]  
4[Option ID=20784]

Sl. No.37

QBID:9062037

‘ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका’ इति ग्रन्थं कः विरचितवान्?

- |                    |                  |
|--------------------|------------------|
| (1) महीधरः         | (2) स्कन्दस्वामी |
| (3) दयानन्दसरस्वती | (4) देवराजयज्वा  |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20785]

2[Option ID=20786]

3[Option ID=20787]

4[Option ID=20788]

Sl. No.38

QBID:9062038

महाभारते रामोपाख्यानं कस्मिन् पर्वणि विद्यते?

- |                  |                       |
|------------------|-----------------------|
| (1) शान्तिपर्वणि | (2) स्वर्गारोहणपर्वणी |
| (3) वनपर्वणि     | (4) विराट्पर्वणि      |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20789]

2[Option ID=20790]

3[Option ID=20791]

4[Option ID=20792]

Sl. No.39

QBID:9062039

सुश्रुतसंहितायाः स्थानानि क्रमेण योजयत -

- (A) चिकित्सास्थानम्  
(B) सूत्रस्थानम्  
(C) शारीरस्थानम्  
(D) निदानस्थानम्

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (D), (B), (A), (C)  
(2) (C), (D), (A), (B)  
(3) (B), (D), (C), (A)  
(4) (D), (C), (B), (A)

- (1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20793]

2[Option ID=20794]

3[Option ID=20795]

4[Option ID=20796]

Sl. No.40

QBID:9062040

“UTF” stands for

(1) Universal Transformation Format

(2) Unicode Transformation Format

(3) Unicode Translation Format

(4) Unicode Text format

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20797]

2[Option ID=20798]

3[Option ID=20799]

4[Option ID=20800]

Sl. No.41

QBID:9062041

वेदान्तसूत्रानुसारं कर्मेन्द्रियैः सह वायुपञ्चकम् उच्यते -

(1) विज्ञानमयकोशः

(2) प्राणमयकोशः

(3) मनोमयकोशः

(4) आनन्दमयकोशः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20801]

2[Option ID=20802]

3[Option ID=20803]

4[Option ID=20804]

Sl. No.42

QBID:9062042

जीवः कतिविधः ?

(1) चतुर्विधः

(2) त्रिविधः

(3) पञ्चविधः

(4) षड्विधः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20805]

2[Option ID=20806]

3[Option ID=20807]

4[Option ID=20808]

Sl. No.43

QBID:9062043

प्रदत्तविकल्पेषु आधारस्य प्रकारः नास्ति -

(1) शैषिकः

(2) औपश्लेषिकः

(3) वैषयिकः

(4) अभिव्यापकः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20809]

2[Option ID=20810]

3[Option ID=20811]

4[Option ID=20812]

Sl. No.44

QBID:9062044

एतेषु ब्रह्मसूत्रे उल्लिखितः आचार्यः नास्ति —————

(1) जैमिनिः

(2) औदुलोमिः

(3) आश्मरथ्यः

(4) शङ्कराचार्यः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20813]

2[Option ID=20814]

3[Option ID=20815]

4[Option ID=20816]

Sl. No.45

QBID:9062045

वेदान्तानुसारम् अग्नेः जायते —————।

(1) पृथिवी

(2) वायुः

(3) आकाशः

(4) जलम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20817]  
2[Option ID=20818]  
3[Option ID=20819]  
4[Option ID=20820]

Sl. No.46

QBID:9062046

“NLTM” stands for

- (1) National Language Translation Mission
- (2) National Linguistic Technology Mission
- (3) National Language Technology Mission
- (4) National Language Transformation Mission

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20821]  
2[Option ID=20822]  
3[Option ID=20823]  
4[Option ID=20824]

Sl. No.47

QBID:9062047

“ASCIT” stands for

- (1) American Standard Code for Information Interchange
- (2) Australian Standard Code for Information Interchange
- (3) Automatic Standard Code for Information Interchange
- (4) Automatic Standard Code for International Interchange

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20825]  
2[Option ID=20826]  
3[Option ID=20827]  
4[Option ID=20828]

Sl. No.48

QBID:9062048

षड्विधलिङ्गैः अशेषवेदान्तानाम् अद्वितीये वस्तुनि तात्पर्यावधारणम् —————

- |                  |             |
|------------------|-------------|
| (1) श्रवणम्      | (2) मननम्   |
| (3) निदिध्यासनम् | (4) ज्ञानम् |

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20829]

2[Option ID=20830]

3[Option ID=20831]

4[Option ID=20832]

Sl. No.49

QBID:9062049

अधोलिखितानि उदाहरणानि सूत्रानुसारं मेलयत -

सूची-I

- (A) इहस्थोऽयं क्रोशे क्रोशाद् वा लक्ष्यं बिध्येत्  
(B) नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः  
(C) रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्  
(D) स्थाल्यां पचति

सूची-II

- (I) यतश्च निर्धारणम्  
(II) षष्ठी चानादरे  
(III) सप्तम्यधिकरणे च  
(IV) सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(III)  
(2) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(III)  
(3) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(IV)  
(4) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20833]

2[Option ID=20834]

3[Option ID=20835]

4[Option ID=20836]

Sl. No.50

QBID:9062050

तपरस्तत्कालस्य इत्यत्र 'तपरः' इत्यस्मिन् पदे समासोऽस्ति

(1) बहुव्रीहिसमासः

(2) द्वन्द्वसमासः

(3) अव्ययीभावसमासः

(4) कर्मधारयसमासः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20837]

2[Option ID=20838]

3[Option ID=20839]  
4[Option ID=20840]

Sl. No.51

QBID:9062051

सामादि-उपायौ चिनुत -

- (A) धर्मः
- (B) दानम्
- (C) रामः
- (D) साम

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A), (B) केवलम्
- (2) (B), (C) केवलम्
- (3) (B), (D) केवलम्
- (4) (C), (D) केवलम्

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20841]  
2[Option ID=20842]  
3[Option ID=20843]  
4[Option ID=20844]

Sl. No.52

QBID:9062052

समुचितं योजयत -

सूची-I टीका

सूची-II टीकाकारः

- |                |                   |
|----------------|-------------------|
| (A) शिरोमणिः   | (I) महेश्वरतीर्थः |
| (B) तत्त्वदीपः | (II) गोविन्दराजः  |
| (C) भूषणम्     | (III) शिवसहायः    |
| (D) तिलकम्     | (IV) नागोजी भट्टः |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)
- (2) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(II)
- (3) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)
- (4) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(IV)

- (1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20845]

2[Option ID=20846]

3[Option ID=20847]

4[Option ID=20848]

Sl. No.53

QBID:9062053

“The Mahabharata Revisited” इति ग्रन्थ कुतः प्रकाशितः

(1) साहित्य अकादमी

(2) भण्डारकरप्राच्यविद्याशोधमन्दिरम्

(3) राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(4) गायकवाडप्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिरम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20849]

2[Option ID=20850]

3[Option ID=20851]

4[Option ID=20852]

Sl. No.54

QBID:9062054

क्रमेण संयोजयत

(A) उद्योगपर्व

(B) अनुशासनपर्व

(C) कर्णपर्व

(D) अश्वमेधपर्व

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(1) (A), (C), (B), (D)

(2) (D), (B), (A), (C)

(3) (C), (A), (B), (D)

(4) (B), (A), (C), (D)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20853]

2[Option ID=20854]

3[Option ID=20855]

4[Option ID=20856]

Sl. No.55

QBID:9062055

भामहस्य काव्यालंकारस्य प्रतिपाद्य विषयान् अध्यायैः सह योजयत -

| सूची-I           | सूची-II             |
|------------------|---------------------|
| (A) काव्यशरीरम्  | (I) चतुर्थाध्याये   |
| (B) अलंकारः      | (II) द्वितीयाध्याये |
| (C) दोषः         | (III) प्रथमाध्याये  |
| (D) न्यायनिर्णयः | (IV) तृतीयाध्याये   |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)
- (2) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)
- (3) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(IV)
- (4) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(II)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20857]

2[Option ID=20858]

3[Option ID=20859]

4[Option ID=20860]

Sl. No.56

QBID:9062056

यथोचितं मेलयत -

| सूची-I               | सूची-II                                       |
|----------------------|-----------------------------------------------|
| (A) प्रश्नोपनिषद्    | (I) मा गृधः कस्यस्विद्धनम्                    |
| (B) तैत्तिरीयोपनिषद् | (II) तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते |
| (C) ईशावास्योपनिषद्  | (III) कुतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्ते        |
| (D) केनोपनिषद्       | (IV) अधिज्योतिषम् अधिविद्यम् अधिप्रजम्        |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
- (2) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)
- (3) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)
- (4) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20861]

2[Option ID=20862]

3[Option ID=20863]

4[Option ID=20864]

Sl. No.57

QBID:9062057

सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि \_\_\_\_\_

(1) काम्यानि

(2) नित्यानि

(3) उपासनानि

(4) प्रायश्चित्तानि

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20865]

2[Option ID=20866]

3[Option ID=20867]

4[Option ID=20868]

Sl. No.58

QBID:9062058

मीमांसानुसारं 'घटः' इति पदस्य कोऽर्थः ?

(1) घटत्वम्

(2) घटत्वविशिष्टघटः

(3) घटः

(4) जातिव्यक्तिविशिष्टघटः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20869]

2[Option ID=20870]

3[Option ID=20871]

4[Option ID=20872]

Sl. No.59

QBID:9062059

यथोचितं मेलयत -

| सूची-I (सूक्तम्)                | सूची-II (संख्या)     |
|---------------------------------|----------------------|
| (A) पुरुषा - उर्वशीसंवादसूक्तम् | (I) ऋग्वेदे 10/95    |
| (B) यम - यमीसंवादसूक्तम्        | (II) ऋग्वेदे 3/33    |
| (C) सरमा - पणिसंवादसूक्तम्      | (III) ऋग्वेदे 10/108 |
| (D) विश्वामित्र - नदीसूक्तम्    | (IV) ऋग्वेदे 10/10   |

यथोचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)
- (2) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)
- (3) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(IV)
- (4) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20873]

2[Option ID=20874]

3[Option ID=20875]

4[Option ID=20876]

Sl. No.60

QBID:9062060

अधोलिखिते कथने पठित्वा यथोचितं विकल्पं चिनुत -

कथन I : प्रमाता प्रमाणं प्रमेयं प्रमितिरीत्येवं चतसृषु विधासु अर्थतत्त्वं न समाप्यते।

कथन II : तदभाववति तत्प्रकारकः अनुभवः यथार्थानुभवः।

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) उभये कथने सत्ये स्तः
- (2) उभये कथने असत्ये स्तः
- (3) प्रथमं कथनं सत्यं किन्तु द्वितीयं कथनम् असत्यम्
- (4) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं कथनं सत्यम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20877]

2[Option ID=20878]

3[Option ID=20879]  
4[Option ID=20880]

Sl. No.61  
QBID:9062061

‘संस्कृतविमर्शः’ इति शोधपत्रिकां प्रकाशयति ?

- |                                                 |                                              |
|-------------------------------------------------|----------------------------------------------|
| (1) केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, देहली       | (2) राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः |
| (3) सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी | (4) दिल्ली-संस्कृत-अकादमी, देहली             |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20881]  
2[Option ID=20882]  
3[Option ID=20883]  
4[Option ID=20884]

Sl. No.62  
QBID:9062062

अधोलिखिते कथने पठित्वा उत्तरं चिनुत -

कथन I : स्वरादीनां निपातसंज्ञा भवत्येव।

कथन II : निपातानाम् अव्ययसंज्ञा भवत्येव।

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) उभये कथने सत्ये स्तः  
(2) उभये कथने असत्ये स्तः  
(3) प्रथमं कथनं सत्यं किन्तु द्वितीयं कथनम् असत्यम्  
(4) प्रथमं कथनम् असत्यं, किन्तु द्वितीयं कथनं सत्यम्

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20885]  
2[Option ID=20886]  
3[Option ID=20887]  
4[Option ID=20888]

Sl. No.63  
QBID:9062063

समुचितं योजयत -

सूची-I

- (A) साधयन्ती सखि...
- (B) पश्य निश्चलनिष्पन्दा...
- (C) मातर्गृहोपकरणमद्य...
- (D) मुखं विकसितस्मितं...

सूची-II

- (I) व्यञ्जकात् - व्यंग्यस्य
- (II) वाच्यात् - व्यंग्यस्य
- (III) गूढव्यंग्यस्य
- (IV) लक्ष्यात् व्यंग्यस्य

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)
- (2) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)
- (3) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
- (4) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20889]

2[Option ID=20890]

3[Option ID=20891]

4[Option ID=20892]

Sl. No.64

QBID:9062064

समुचितं योजयत -

सूची-I (रसः)

- (A) करुणः
- (B) वीरः
- (C) अद्भुतः
- (D) शृङ्गारः

सूची-II (देवता)

- (I) गन्धर्वः
- (II) महेन्द्रः
- (III) विष्णुः
- (IV) यमः

यथोचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)
- (2) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
- (3) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)
- (4) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

- 1[Option ID=20893]  
2[Option ID=20894]  
3[Option ID=20895]  
4[Option ID=20896]

Sl. No.65

QBID:9062065

अधोलिखिते कथने पठित्वा उत्तरं चिनुत -

कथन I : यः यः उपसर्गः स स गतिसंज्ञः भवत्येव।

कथन II : यः यः गतिसंज्ञः स स उपसर्गः भवत्येव।

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) उभये कथने सत्ये स्तः  
(2) उभये कथने असत्ये स्तः  
(3) प्रथमं कथनं सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम्  
(4) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं सत्यम्

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

- 1[Option ID=20897]  
2[Option ID=20898]  
3[Option ID=20899]  
4[Option ID=20900]

Sl. No.66

QBID:9062066

अधोलिखिते कथने पठित्वा उत्तरं चिनुत -

कथनम् I : काव्यमीमांसायां 18 अधिकरणानि निर्दिष्टानि किन्तु साम्प्रतम् एकमेवादधिकरणमुपलभ्यते।  
तत्र प्रथमाध्यायनाम भवति कविरहस्यम्।

कथनम् II : कोलाचलमल्लिनाथसूरिणा पञ्चमहाकाव्यैः साकं मेघदूतस्यापि टीका कृता, यस्याः नाम सञ्जीवनी।

यथोचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) उभये कथने सत्ये स्तः  
(2) उभये कथने असत्ये स्तः  
(3) प्रथमं कथनं सत्यं किन्तु द्वितीयं कथनम् असत्यम्  
(4) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं कथनं सत्यम्

- (1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20901]

2[Option ID=20902]

3[Option ID=20903]

4[Option ID=20904]

Sl. No.67

QBID:9062067

‘विभाषा’ इति कस्या संज्ञा ?

(1) न इत्यस्य

(2) वा इत्यस्य

(3) च इत्यस्य

(4) न वेत्युभयोः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20905]

2[Option ID=20906]

3[Option ID=20907]

4[Option ID=20908]

Sl. No.68

QBID:9062068

‘उद्स्थानम्’ इत्यत्र सन्धौ समुचितं विकल्पं किम् ?

(A) उद् स्थानम्

(B) उत्थानम्

(C) उत्स्थानम्

(D) उत्स्थानम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(1) (B), (C) केवलम्

(2) (A), (B) केवलम्

(3) (B), (D) केवलम्

(4) (C), (D) केवलम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20909]

2[Option ID=20910]

3[Option ID=20911]  
4[Option ID=20912]

Sl. No.69  
QBID:9062069

‘श्रीमद्भगवद्गीता’ महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि समुपलभ्यते ?

- |                   |                  |
|-------------------|------------------|
| (1) अनुशासनपर्वणि | (2) शान्तिपर्वणि |
| (3) उद्योगपर्वणि  | (4) भीष्मपर्वणि  |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20913]  
2[Option ID=20914]  
3[Option ID=20915]  
4[Option ID=20916]

Sl. No.70  
QBID:9062070

न्यू कैटेलोगोरस् कैटेलोगोरस् कुतः (NCC) प्रकाश्यते ?

- |                           |                                         |
|---------------------------|-----------------------------------------|
| (1) मैसूरुविश्वविद्यालयतः | (2) भण्डारकरप्राच्यविद्याशोधमन्दिरतः    |
| (3) मद्रासविश्वविद्यालयतः | (4) गायकवाड-प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिरतः |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=20917]  
2[Option ID=20918]  
3[Option ID=20919]  
4[Option ID=20920]

Sl. No.71  
QBID:9062071

यथोचितं मेलयत -

सूची-I

- (A) असतः सत् जायते
- (B) सतः असत् जायते
- (C) सतः सत् जायते
- (D) सतः मिथ्यारूपेण प्रतीतिः जायते

सूची-II

- (I) नैयायिकाः
- (II) अद्वैतवेदान्तिनः
- (III) बौद्धाः
- (IV) सांख्याः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)
- (2) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(IV)
- (3) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(I)
- (4) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(III)

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20921]  
2[Option ID=20922]  
3[Option ID=20923]  
4[Option ID=20924]

Sl. No.72  
QBID:9062072

वेदान्तसारे प्रत्यगात्मसर्वेक्षणे कस्य उल्लेखः नास्ति -

- (1) पूर्वमीमांसायाः
- (2) विज्ञानवादस्य
- (3) शून्यवादस्य
- (4) शैवसिद्धान्तस्य

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20925]  
2[Option ID=20926]  
3[Option ID=20927]  
4[Option ID=20928]

Sl. No.73  
QBID:9062073

यथोचितं मेलयत -

| सूची-I (ग्रन्थः)  | सूची-II (ग्रन्थकारः) |
|-------------------|----------------------|
| (A) दीधितिः       | (I) मण्डनमिश्रः      |
| (B) श्रीकरभाष्यम् | (II) रघुनाथ शिरोमणिः |
| (C) विभ्रमविवेकः  | (III) श्रीपतिः       |
| (D) अद्वैतसिद्धिः | (IV) मधुसूदनसरस्वती  |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)
- (2) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)
- (3) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)
- (4) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20929]  
2[Option ID=20930]  
3[Option ID=20931]  
4[Option ID=20932]

Sl. No.74

QBID:9062074

आभ्यान्तरप्रयत्नानुसारं मेलयत -

| सूची-I            | सूची-II                |
|-------------------|------------------------|
| (A) ईषत्स्पृष्टम् | (I) अन्तःस्थानाम्      |
| (B) स्पृष्टम्     | (II) स्वराणाम्         |
| (C) विवृतम्       | (III) स्पर्शानाम्      |
| (D) संवृतम्       | (IV) ह्रस्वस्यावर्णस्य |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
- (2) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(IV)
- (3) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)
- (4) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3

(4) 4

1[Option ID=20933]  
2[Option ID=20934]  
3[Option ID=20935]  
4[Option ID=20936]

Sl. No.75

QBID:9062075

अधोलिखिते कथने पठित्वा उत्तरं चिनुत -

कथन I : संयोगः अस्ति चेत् संहिता अस्ति एव।

कथन II : संहिता अस्ति चेत् संयोगः अस्ति एव।

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) उभये कथने सत्ये स्तः
- (2) उभये कथने असत्ये स्तः
- (3) प्रथमं कथनं सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम्
- (4) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं सत्यम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20937]  
2[Option ID=20938]  
3[Option ID=20939]  
4[Option ID=20940]

Sl. No.76

QBID:9062076

समुचितं योजयत -

सूची-I

- (A) स्वरमङ्गला
- (B) पुराणम्
- (C) सारस्वतीसुषमा
- (D) सागरिका

सूची-II

- (I) हरिसिंहगौरविश्वविद्यालयः
- (II) सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय
- (III) राजस्थान-संस्कृत-अकादमी
- (IV) काशीराजट्रस्ट्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(III)
- (2) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)
- (3) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(II)
- (4) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20941]

2[Option ID=20942]

3[Option ID=20943]

4[Option ID=20944]

Sl. No.77

QBID:9062077

अधोलिखितेषु अपवादसूत्रमस्ति -

(1) अचो यत्

(2) इको यणचि

(3) ऋहलोर्ण्यत्

(4) एकः पूर्वपरयोः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20945]

2[Option ID=20946]

3[Option ID=20947]

4[Option ID=20948]

Sl. No.78

QBID:9062078

‘शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते’। इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते?

(1) रघुवंशे

(2) कुमारसम्भवे

(3) शिशुपालवधे

(4) नैषधीयचरिते

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20949]

2[Option ID=20950]

3[Option ID=20951]

4[Option ID=20952]

Sl. No.79

QBID:9062079

‘हलीषा’ पदस्य सन्धिविग्रहोऽस्ति -

(1) हलस् + ईषा

(2) हल् + ईषा

(3) हल + ईषा

(4) हलि + ईषा

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20953]

2[Option ID=20954]

3[Option ID=20955]

4[Option ID=20956]

Sl. No.80

QBID:9062080

‘ओरायनः’ इत्यस्य ग्रन्थस्य लेखकः

(1) बालगंगाधरतिलकः

(2) श्री अरविन्दः

(3) मैकडानलः

(4) महर्षिदयानन्दः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20957]

2[Option ID=20958]

3[Option ID=20959]

4[Option ID=20960]

Sl. No.81

QBID:9062081

‘कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने। नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे।’  
इत्यत्र कः अलङ्कारः वर्तते ?

(1) विभावना

(2) निदर्शना

(3) विशेषोक्तिः

(4) पर्यायोक्तिः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20961]

2[Option ID=20962]

3[Option ID=20963]

4[Option ID=20964]

Sl. No.82

QBID:9062082

‘प्रकृतं निषिध्य अन्यत् साधितं चेत्’ कः अलङ्कारः भवति ?

(1) पर्यायोक्तिः

(2) आक्षेपः

(3) विरोधः

(4) अपह्नुतिः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20965]  
2[Option ID=20966]  
3[Option ID=20967]  
4[Option ID=20968]

Sl. No.83

QBID:9062083

अधोलिखिते कथने पठित्वा उत्तरं चिनुत -

कथनम् I : दीपकालङ्कारे वर्णानामवर्णानां धर्मैक्यकथनं भवति।

कथनम् II : तुल्ययोगितायां वर्णानाम् अवर्णानां वा धर्मैक्यकथनं भवति।

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) उभये कथने सत्ये स्तः
- (2) उभये कथने असत्ये स्तः
- (3) प्रथमं कथनं सत्यं किन्तु द्वितीयं कथनम् असत्यम्
- (4) प्रथमं कथनम् असत्यम् किन्तु द्वितीयं कथनं सत्यम्

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20969]  
2[Option ID=20970]  
3[Option ID=20971]  
4[Option ID=20972]

Sl. No.84

QBID:9062084

‘तिलकमञ्जरी’ इति ग्रन्थः वर्तते -

- |                  |                  |
|------------------|------------------|
| (1) पद्यकाव्यम्  | (2) गद्यकाव्यम्  |
| (3) चम्पूकाव्यम् | (4) दृश्यकाव्यम् |

- (1) 1
- (2) 2
- (3) 3
- (4) 4

1[Option ID=20973]  
2[Option ID=20974]  
3[Option ID=20975]  
4[Option ID=20976]

Sl. No.85

QBID:9062085

‘एङि पररूपम्’ इति सूत्रस्यापवादोऽस्ति -

(1) वृद्धिरेचि

(2) एङः पदान्तादति

(3) एत्येधत्थूट्सु

(4) आद् गुणः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20977]

2[Option ID=20978]

3[Option ID=20979]

4[Option ID=20980]

Sl. No.86

QBID:9062086

भासविरचितं महाभारताश्रितं रूपकं चिनुत -

(A) प्रतिमानाटकम्

(B) अविमारकम्

(C) मध्यमव्यायोगः

(D) दूतवाक्यम्

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

(1) (A), (B) केवलम्

(2) (B), (C) केवलम्

(3) (C), (D) केवलम्

(4) (B), (D) केवलम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20981]

2[Option ID=20982]

3[Option ID=20983]

4[Option ID=20984]

Sl. No.87

QBID:9062087

नव्यन्यायानुसारम् अवच्छेदकः अस्ति -

(1) अभावः

(2) द्रव्यम्

(3) सम्बन्धः

(4) विशेषः

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20985]

2[Option ID=20986]

3[Option ID=20987]

4[Option ID=20988]

Sl. No.88

QBID:9062088

अधोलिखिते कथने पठित्वा समुचितं विकल्पं चिनुत -

कथन I : तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः।

कथनम् II : सम्बन्धः द्विष्टः।

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

(1) उभये कथने सत्ये स्तः

(2) उभये कथने असत्ये स्तः

(3) प्रथमं कथनं सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम्

(4) प्रथमं कथनम् असत्यम् किन्तु द्वितीयं सत्यम्

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20989]

2[Option ID=20990]

3[Option ID=20991]

4[Option ID=20992]

Sl. No.89

QBID:9062089

सांख्यमतानुसारं यथोचितं मेलयत -

| सूची-I       | सूची-II            |
|--------------|--------------------|
| (A) तमः      | (I) दशविधम्        |
| (B) महामोहः  | (II) अष्टविधम्     |
| (C) तामिस्रः | (III) त्रयोदशविधम् |
| (D) करणम्    | (IV) अष्टादशविधम्  |

समुचितं विकल्प चिनुत -

- (1) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
- (2) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)
- (3) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
- (4) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20993]

2[Option ID=20994]

3[Option ID=20995]

4[Option ID=20996]

Sl. No.90

QBID:9062090

वेदान्तसारानुसारं यथोचितं मेलयत -

| सूची-I        | सूची-II                      |
|---------------|------------------------------|
| (A) अधिकारी   | (I) प्रतिपाद्य-प्रतिपादकभावः |
| (B) विषयः     | (II) अज्ञाननिवृत्तिः         |
| (C) सम्बन्धः  | (III) साधनचतुष्टयसम्पन्नः    |
| (D) प्रयोजनम् | (IV) ब्रह्मात्मैक्यम्        |

समुचितं विकल्प चिनुत -

- (1) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)
- (2) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)
- (3) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)
- (4) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=20997]  
2[Option ID=20998]  
3[Option ID=20999]  
4[Option ID=21000]

Sl. No.91

QBID:9062091

योगसूत्रव्यासभाष्यानुसारं 'पुरुषस्य चैतन्यम्' इति वाक्यं सम्बद्धमस्ति -

- |               |              |
|---------------|--------------|
| (1) विपर्ययेन | (2) विकल्पेन |
| (3) प्रमाणेन  | (4) निद्रया  |

(1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=21001]  
2[Option ID=21002]  
3[Option ID=21003]  
4[Option ID=21004]

Sl. No.92

QBID:9062092

न्यायदर्शनानुसारं वादः अस्ति -

- |                        |                       |
|------------------------|-----------------------|
| (1) विजिगीषु कथा       | (2) तत्त्वबुभुत्सुकथा |
| (3) स्वपक्षस्थापनाहीनः | (4) रामकथा            |

(1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=21005]  
2[Option ID=21006]  
3[Option ID=21007]  
4[Option ID=21008]

Sl. No.93

QBID:9062093

"TDIL" Stands For

- |                                                       |
|-------------------------------------------------------|
| (1) Technical Development For Indian Languages        |
| (2) Technology Development For Indian Languages       |
| (3) Translation Development For Indian Languages      |
| (4) Technical Development For International Languages |

(1) 1  
(2) 2  
(3) 3

(4) 4

1[Option ID=21009]  
2[Option ID=21010]  
3[Option ID=21011]  
4[Option ID=21012]

Sl. No.94

QBID:9062094

योगसूत्रानुसारं योजयत -

| सूची-I        | सूची-II        |
|---------------|----------------|
| (A) अविद्या   | (I) अहंकारः    |
| (B) अस्मिता   | (II) भयम्      |
| (C) द्वेषः    | (III) विपर्ययः |
| (D) अभिनिवेशः | (IV) क्रोधः    |

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (1) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)
- (2) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(III)
- (3) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(II)
- (4) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=21013]  
2[Option ID=21014]  
3[Option ID=21015]  
4[Option ID=21016]

Sl. No.95

QBID:9062095

यथोचितं मेलयत -

| सूची-I (महाकाव्यम्)    | सूची-II (सर्गः)       |
|------------------------|-----------------------|
| (A) श्रीकण्ठचरितम्     | (I) द्वाविंशतिसर्गः   |
| (B) जानकीहरणम्         | (II) अष्टादशसर्गः     |
| (C) नवसाहस्रान्कचरितम् | (III) पञ्चविंशतिसर्गः |
| (D) नैषधचरितम्         | (IV) षोडशसर्गः        |

समुचितम् उत्तरं चिनुत -

- (1) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)
- (2) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
- (3) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)
- (4) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=21017]

2[Option ID=21018]

3[Option ID=21019]

4[Option ID=21020]

Sl. No.96

QBID:9062096

गद्यांश पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत

दृष्ट्वा च तां तथा हसन्तीं स मुनिः 'आः पापकारिणि, दुर्गुहीतविद्यालवावलेपदुर्विदग्धे, मामुपहससि' इत्युक्त्वा शिरः कम्पशीर्यमाणबन्धविशरारोरुन्मिषत्पिङ्गलिम्बो जटाकलापस्य रोचिषा सिञ्चन्निव रोषदहनद्रवेण दश दिशः, कृतकालसन्निधानामिवान्धकारितललाटपट्टाष्टा-पदामन्तःपुरमण्डनपत्रभङ्गमकरिकां भ्रुकुटिमाबध्नन्, अतिलोहितेन चक्षुषामर्षदेवतायै स्वरुधरोपहारमिव प्रयच्छन् निर्दयदष्टदशनच्छदभयपलायमानामिव वाचं रुन्धन्दन्तांशुच्छलेन, शापशासनपट्टस्येव अंसावस्रंसिनो ग्रन्थग्रन्थिमन्यथा कृष्णाजिनस्य, स्वेदकणप्रतिबिम्बितैः शापशङ्काशरणागतैरिव सुरासुरमुनिभिः प्रतिपन्नसर्वावयवः कोपकम्पतरलिताङ्गुलिना करेण प्रसादनलग्नग्रामक्षरमालामिवाक्षमालामाक्षिप्य कामण्डलवेन वारिणा समुपस्पृश्य शापजलं जग्राह।

'प्रयच्छन्' इति पदे प्रत्ययोऽस्ति -

- |           |            |
|-----------|------------|
| (1) क्त   | (2) शतृ    |
| (3) शानच् | (4) क्तवतु |

(1) 1

(2) 2

(3) 3

(4) 4

1[Option ID=21021]

2[Option ID=21022]  
3[Option ID=21023]  
4[Option ID=21024]

Sl. No.97

QBID:9062097

गद्यांश पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत

दृष्ट्वा च तां तथा हसन्तीं स मुनिः 'आः पापकारिणि, दुर्गुहीतविद्यालवावलेपदुर्विदग्धे, मामुपहससि' इत्युक्त्वा शिरः कम्पशीर्यमाणबन्धविशरारोरुन्मिषत्पिङ्गलिम्बो जटाकलापस्य रोचिषा सिञ्चन्निव रोषदहनद्रवेण दश दिशः, कृतकालसन्निधानामिवान्धकारितललाटपट्टाष्टा-पदामन्तःपुरमण्डनपत्रभङ्गमकरिकां भ्रुकुटिमाबध्नन्, अतिलोहितेन चक्षुषामर्षदेवतायै स्वरुधरोपहारमिव प्रयच्छन् निर्दयदष्टदशनच्छदभयपलायमानामिव वाचं रुन्धन्दन्तांशुच्छलेन, शापशासनपट्टस्येव अंसावसंसिनो ग्रन्थग्रन्थिमन्यथा कृष्णाजिनस्य, स्वेदकणप्रतिबिम्बितैः शापशङ्काशरणागतैरिव सुरासुरमुनिभिः प्रतिपन्नसर्वावयवः कोपकम्पतरलिताङ्गुलिना करेण प्रसादनलग्नग्रामक्षरमालामिवाक्षमालामाक्षिप्य कामण्डलवेन वारिणा समुपस्पृश्य शापजलं जग्राह।

'क्रोधः' इत्यस्मिन् अर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

- |               |                |
|---------------|----------------|
| (1) अतिलोहितः | (2) अमर्षः     |
| (3) रोचिषा    | (4) प्रतिपन्नः |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

1[Option ID=21025]  
2[Option ID=21026]  
3[Option ID=21027]  
4[Option ID=21028]

Sl. No.98

QBID:9062098

गद्यांश पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत

दृष्ट्वा च तां तथा हसन्तीं स मुनिः 'आः पापकारिणि, दुर्गुहीतविद्यालवावलेपदुर्विदग्धे, मामुपहससि' इत्युक्त्वा शिरः कम्पशीर्यमाणबन्धविशरारोरुन्मिषत्पिङ्गलिम्बो जटाकलापस्य रोचिषा सिञ्चन्निव रोषदहनद्रवेण दश दिशः, कृतकालसन्निधानामिवान्धकारितललाटपट्टाष्टा-पदामन्तःपुरमण्डनपत्रभङ्गमकरिकां भ्रुकुटिमाबध्नन्, अतिलोहितेन चक्षुषामर्षदेवतायै स्वरुधरोपहारमिव प्रयच्छन् निर्दयदष्टदशनच्छदभयपलायमानामिव वाचं रुन्धन्दन्तांशुच्छलेन, शापशासनपट्टस्येव अंसावसंसिनो ग्रन्थग्रन्थिमन्यथा कृष्णाजिनस्य, स्वेदकणप्रतिबिम्बितैः शापशङ्काशरणागतैरिव सुरासुरमुनिभिः प्रतिपन्नसर्वावयवः कोपकम्पतरलिताङ्गुलिना करेण प्रसादनलग्नग्रामक्षरमालामिवाक्षमालामाक्षिप्य कामण्डलवेन वारिणा समुपस्पृश्य शापजलं जग्राह।

शापजलं कः जग्राह?

- |                  |             |
|------------------|-------------|
| (1) पापकारिणी    | (2) मुनिः   |
| (3) देवी सरस्वती | (4) इन्द्रः |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3

(4) 4

- 1[Option ID=21029]  
2[Option ID=21030]  
3[Option ID=21031]  
4[Option ID=21032]

Sl. No.99

QBID:9062099

गद्यांश पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत

दृष्ट्वा च तां तथा हसन्तीं स मुनिः 'आः पापकारिणि, दुर्गुहीतविद्यालवावलेपदुर्विदग्धे, मामुपहससि' इत्युक्त्वा शिरः कम्पशीर्यमाणबन्धविशरारोरुन्मिषत्पिङ्गलिम्बो जटाकलापस्य रोचिषा सिञ्चन्निव रोषदहनद्रवेण दश दिशः, कृतकालसन्निधानामिवान्धकारितललाटपट्टाष्टा-पदामन्तःपुरमण्डनपत्रभङ्गमकरिकां भ्रुकुटिमाबध्नन्, अतिलोहितेन चक्षुषामर्षदेवतायै स्वरुधरोपहारमिव प्रयच्छन् निर्दयदष्टदशनच्छदभयपलायमानामिव वाचं रुन्धन्दन्तांशुच्छलेन, शापशासनपट्टस्येव अंसावसंसिनो ग्रन्थग्रन्थिमन्यथा कृष्णाजिनस्य, स्वेदकणप्रतिबिम्बितैः शापशङ्काशरणागतैरिव सुरासुरमुनिभिः प्रतिपन्नसर्वावयवः कोपकम्पतरलिताङ्गुलिना करेण प्रसादनलग्नग्रामक्षरमालामिवाक्षमालामाक्षिप्य कामण्डलवेन वारिणा समुपस्पृश्य शापजलं जग्राह।

'कामण्डलवः' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययोऽस्ति -

- |            |            |
|------------|------------|
| (1) क्तवतु | (2) ण्वुल् |
| (3) अण्    | (4) वुन्   |

- (1) 1  
(2) 2  
(3) 3  
(4) 4

- 1[Option ID=21033]  
2[Option ID=21034]  
3[Option ID=21035]  
4[Option ID=21036]

Sl. No.100

QBID:9062100

गद्यांश पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत

दृष्ट्वा च तां तथा हसन्तीं स मुनिः 'आः पापकारिणि, दुर्गुहीतविद्यालवावलेपदुर्विदग्धे, मामुपहससि' इत्युक्त्वा शिरः कम्पशीर्यमाणबन्धविशरारोरुन्मिषत्पिङ्गलिम्बो जटाकलापस्य रोचिषा सिञ्चन्निव रोषदहनद्रवेण दश दिशः, कृतकालसन्निधानामिवान्धकारितललाटपट्टाष्टा-पदामन्तःपुरमण्डनपत्रभङ्गमकरिकां भ्रुकुटिमाबध्नन्, अतिलोहितेन चक्षुषामर्षदेवतायै स्वरुधरोपहारमिव प्रयच्छन् निर्दयदष्टदशनच्छदभयपलायमानामिव वाचं रुन्धन्दन्तांशुच्छलेन, शापशासनपट्टस्येव अंसावसंसिनो ग्रन्थग्रन्थिमन्यथा कृष्णाजिनस्य, स्वेदकणप्रतिबिम्बितैः शापशङ्काशरणागतैरिव सुरासुरमुनिभिः प्रतिपन्नसर्वावयवः कोपकम्पतरलिताङ्गुलिना करेण प्रसादनलग्नग्रामक्षरमालामिवाक्षमालामाक्षिप्य कामण्डलवेन वारिणा समुपस्पृश्य शापजलं जग्राह।

'पापकारिणि' इति रूपमस्ति -

- |               |                  |
|---------------|------------------|
| (1) समम्याम्  | (2) पञ्चम्याम्   |
| (3) सम्बुद्धौ | (4) द्वितीयायाम् |

- (1) 1

**(2) 2**

**(3) 3**

**(4) 4**

**1[Option ID=21037]**

**2[Option ID=21038]**

**3[Option ID=21039]**

**4[Option ID=21040]**